बुरहानपुर : एकतरफा इश्क में फर्नीचर शोरूम संचालक ने की अपनी सेल्सगर्ल की हत्या

एकतरफा इश्क

अजय जानता था कि गरीबी अक्सर लड़कियों को समझौता करने के लिए मजबूर कर देती है। इसलिए शादीशुदा अजय भी अपने शोरूम में सेल्सगर्ल के रूप में नौकरी करने वाली निकिता की नजदीकी हासिल करने के सपने देखने लगा था। लेकिन निकिता ने ऐसा समझौता करने के बजाए नौकरी ही छोड़ दी तो...

आरोपी अजय

17 मार्च की दोपहर के लगभग 12 बजे का वक्त था। बुरहानपुर में गणपति थाने के ठीक सामने वाली सड़क पर रोज की तरह भीड़ थी। इसी सड़क पर बीस कदम की दूरी पर राजकुमार फर्नीचर का शोरूम था। दुकान के बाहर एक मारुति वैन खड़ी थी, जिस पर बड़े-बड़े अक्षरों में लिखा था राजकुमार फर्नीचर, विवाह संस्कार के लिए विशेष ऑफर।

लेकिन इस दुकान के अंदर का नजारा कुछ और ही था। अंदर सीने पर गहरा घाव लिए 22 साल की खूबसूरत युवती निकिता सुराड़े फर्श पर पड़ी थी। उसकी सलवार-कुर्ती खून से लथपथ थी और खून का एक दरिया दुकान के संगमरमरी फर्श पर फैल रहा था। दुकान के एक कोने में खड़े 35 साल का अर्जुन सुगंधी, शोरूम का मालिक, हाथ में खून से सना हुआ धारदार हथियार लिए सुन्न खड़ा था। उसकी आंखों में न पछतावा था, न डर। बस एक अजीब सी खालीपन था। उसकी भाभी, बड़े भाई अजय सुगंधी की पत्नी, दुकान के पिछले हिस्से में दरवाजा बंद करके कांप रही थी।

यह सब इतनी तेजी से हुआ था कि दुकान के बाहर से गुजर रहे लोगों को पता भी नहीं चला कि अंदर एक हत्या हो चुकी है। लेकिन इस हत्या से पहले क्या हुआ?

सुबह के 9 बजे आलमगंज में निकिता का घर। आलमगंज की तंग गलियों में बसे एक छोटे से किराए के मकान में निकिता अपनी मां, दो छोटी बहनों के साथ रहती थी। उसके पिता की मृत्यु पांच साल पहले हो चुकी थी। उसकी मां, कमला सुराड़े, मारवाड़ी परिवारों में खाना बनाकर अपने परिवार का गुजारा चलाती थीं।

निकिता और उसकी छोटी बहन स्नेहा कॉलेज जाती थीं। दोनों बहनों ने घर की आर्थिक स्थिति सुधारने के लिए पढ़ाई के साथ-साथ नौकरी करने का फैसला किया था। दो साल पहले निकिता ने राजकुमार फर्नीचर में काम करना शुरू किया था। वह पढ़ाई में तेज थी, साथ ही बातचीत करने में भी माहिर थी। शोरूम के मालिक अर्जुन सुगंधी और उसके बड़े भाई अजय सुगंधी दोनों ही उसके काम से खुश थे।

लेकिन पिछले कुछ महीनों में माहौल बदलने लगा था। अजय सुगंधी, जो शादीशुदा था और दो बच्चों का बाप था, निकिता पर झुकने लगा। पहले वह उसकी तारीफ करता, फिर उसे महंगे गिफ्ट देने की कोशिश करता। निकिता ने पहले तो अनदेखा किया, लेकिन जब अजय ने एक दिन उसे साफ तौर पर कह दिया कि वह उसे पसंद करता है, तो निकिता ने उसे साफ मना कर दिया।

16 मार्च की रात को निकिता ने अपनी मां से कहा, मां, मैं कल से शोरूम नहीं जाऊंगी। अजय भैया बहुत परेशान करते हैं। उनकी शादी है, बच्चे हैं, फिर भी... मैंने उन्हें साफ मना कर दिया है।

कमला ने बेटी की बात सुनकर उनका गम और गहरा गया। ठीक है बेटा, तू वहां मत जा। मैं भी चाहती हूं कि तू अब घर पर रहे। तेरी शादी की तैयारियां भी करनी हैं। पुणे वाले परिवार ने हां कर दी है। दस दिन बाद तेरी सगाई है।

निकिता की आंखों में चमक आ गई। वह सिर्फ 22 साल की थी और उसका पूरा जीवन उसके सामने था। उसने पुणे वाले लड़के की तस्वीर देखी थी, अच्छा लग रहा था। वह सोच रही थी कि कैसे वह शादी के बाद पुणे जाकर अपनी पढ़ाई पूरी करेगी, शायद कोई अच्छी नौकरी भी कर ले।

शेष पृष्ठ 7 पर...

मृतका निकिता

दस दिन बाद होनी थी सगाई

मृतका के पिता का कई साल पहले स्वर्गवास हो चुका है। मां घरों में खाना बनाकर परिवार चलाती है। मां का हाथ बंटाने के लिए निकिता ने नौकरी करना शुरू कर दिया था लेकिन यही नौकरी उसकी हत्या का कारण बनी। निकिता की मां ने बताया कि उसका रिश्ता पक्का हो चुका था। दस दिन बाद ही पुणे के एक युवक के साथ उसकी सगाई होने वाली थी।

सीसीटीवी में कैद मिली पूरी घटना

पुलिस ने दुकान में लगे सीसीटीवी कैमरे का डीवीआर जब्त कर लिया गया। उसमें पूरी घटना कैद है कि कैसे अर्जुन की भाभी ने मृतका से मारपीट की जिससे बचने के लिए निकिता भागने लगी तो अर्जुन ने बेरहमी से उसकी हत्या कर दी। पुलिस के अनुसार सीसीटीवी फुटेज आरोपी के खिलाफ अदालत में मजबूत सबूत बनेगा।

गरीब सोचकर डाल रहा था डोरे

जांच में सामने आया है कि अजय जानता था कि निकिता गरीब परिवार से है इसलिए आसानी से उसके जाल में आ जाएगी। इसलिए उसने निकिता को मंहगे उपहार देकर लुभाने की कोशिश की लेकिन निकिता की तरफ से कोई संकेत नहीं मिला तो उसने निकिता के सामने अपने प्रेम का प्रस्ताव रखा जिसे निकिता ने मना कर दिया और दुकान का काम छोड़ दिया था।

मृतका निकिता तथा घटना की जांच करती पुलिस

सत्यकथा

गांव-गांव घूमकर मोबाइल क्लीनिक चलाने वाला डॉक्टर नीलेश कुर्मी का दिल अपनी एक युवा मरीज से लग गया था। समय के साथ इस खूबसूरत मरीज के साथ डॉक्टर का प्यार ऐसा परवान चढ़ा के तीन किशोर बच्चों की परवाह किए बिना एक दिन आरोपी डॉक्टर ने अपनी पत्नी की हत्या कर दी ताकि बाकि की जिंदगी प्रेमिका के साथ बिता सके।

बनेंगे कार

मृतका सीमा तथा आरोपी डॉक्टर पति नीलेश कुर्मी

21 मार्च की सुबह गढ़ाकोटा से सागर की ओर दौड़ रही कार 50 किलोमीटर की दूरी तय करने के बाद सनौधा थाना इलाके में चनाटोरिया की पहाड़ी पर अचानक की धू-धू कर जल उठी। पास में स्थित चनाटोरिया टोल प्लाजा के कर्मचारियों ने तत्काल सानौधा थाना टीआई भरत सिंह ठाकुर को इस बात की खबर कर दी। सूचना पाते ही फायर ब्रिगेड अमले को जानकारी देकर श्री ठाकुर मौके पर पहुंच गए। कड़ी मसक्कत के बाद जब कार की आग बुझाई गई, तो पुलिस अधिकारियों को कार की पिछली सीट पर एक नर कंकाल पड़ा दिखा। कार के पास तीन आदमी पास में खड़े थे जो घटना के समय कार में सवार थे लेकिन आश्चर्यजनक रूप से तीनों को एक खरोंच भी नहीं आई थी। उन्हीं में से एक ने अपना परिचय डॉक्टर नीलेश कुर्मी के तौर पर देकर बताया कि कार में उनके साथ उसकी पत्नी सीमा भी सवार थी। सीमा को हार्ट अटैक आया था जिसके चलते वह उसे उपचार के लिए सागर लेकर जा रहा कि अचानक हुए एक्सीडेंट के बाद कार में आग लग गई मगर वह पीछे की सीट पर लेटी अपनी पत्नी को न बचा सका। जाहिर है कि कार में पड़ा कंकाल नीलेश की पत्नी सीमा का था। मगर नीलेश की बात थानेदार श्री ठाकुर के गले नहीं उतर रही थी कि जिस कार में आग लगी हो उसमें बैठे चार में से तीन लोग तो बिना किसी खरोंच के बाहर निकल आए जबकि चौथी सवारी जो भले की बीमार हो जलकर राख बन जाए। आखिर आग लगने पर सीमा ने भी तो बाहर निकलने की कोशिश की होगी ऐसे में उसका कंकाल सीट पर लेटी अवस्था में मिलना मामले में शक पैदा करने काफी था इसलिए प्रभारी श्री ठाकुर समझ चुके थे कि मामला कुछ और ही है। डॉ. नीलेश कुर्मी गढ़ाकोटा में एक

नीलेश चौरसिया

सम्मानित व्यक्ति थे। कस्बे के बीचों बीच स्थित उनका क्लिनिक सालों से स्थानीय लोगों की सेवा कर रहा था। मरीज उनके ऊपर भरोसा और पड़ोसी उनका सम्मान करते थे। नीलेश की पत्नी सीमा चुपचाप घर संभालती थीं, और तीन बच्चे एक खुशहाल परिवार की तस्वीर पूरी करती थी। लेकिन पिछले कुछ महीनों से सीमा ने अपने पति में बदलाव देखना शुरू कर दिया था। क्लिनिक में देर रात तक रुकना। घर आने के बाद धीमें स्वर में किसी से फोन पर घंटों बातें करना। उसका जब भी फोन बजता वह सीमा के सामने बात करने के बजाए बाहर जाकर बात करना। औरत ऐसे मामले में पलक झपकते सब कुछ समझने की काबलियत रखती है। इससे सीमा समझ गई कि उसका पति जरूर किसी दूसरी औरत के फेर में है। इसका सबसे बड़ा कारण तो यही था कि पहले जहां नीलेश हर दूसरे-तीसरे दिन पत्नी को अपने कमरे में सोने के लिए दबाव बनाने लगता था वहीं अब वह महीनों तक उसके साथ सोने की चेष्टा भी नहीं करता। -शेष पृष्ठ 4 पर...

झाबुआ

पति की हत्या कर शराब पीकर रिश्तेदार की शादी में जाकर नाचने लगी नाबालिग बीवी

“झाबुआ जिले के नारेला गांव के एक घर में बारात की तैयारियां थीं, तो दूसरे घर में एक लाश बेजान पड़ी थी। दोनों घरों के बीच की दूरी महज कुछ कदम थी, लेकिन इन चंद कदमों में एक ऐसा खूनी रहस्य छिपा था, जिसने पूरे गांव को हिलाकर रख दिया।

नाबालिग कातिल बीवी

हत्या के बाद शादी में नाचती आरोपी पत्नी

दो बार कर चुकी थी प्रेमी के पास जाने की कोशिश

सीमा गांव आने के बाद दो बार भागकर मोरबी में अपने प्रेमी के पास जाने का प्रयास कर चुकी थी। एक बाद उसे गांव के बाहर ही पकड़ लिया गया था जबकि दूसरी बार पुलिस की मदद से रेलवे स्टेशन से बरामद किया गया था। सीमा के बार-बार भागने से कैलाश उसके साथ मारपीट करने लगा था।

दस साल का अंतर बना कारण

सीमा और कैलाश की उम्र में दस साल का अंतर था। इसलिए 16 साल की सीमा के स्वभाव की चंचलता कैलाश को पसंद नही थी। सीमा को अश्लील फिल्में देखने का भी शोक था। इसके लिए कैलाश अक्सर उसकी इस हरकत को बचपना बताकर उसे डांट देता था जिसके चलते सीमा मन की मन पति से दूर हो गई थी। यही कारण है कि जब मोरबी में उसकी दोस्ती अपनी उम्र के लड़कों से हुई तो उसके अवैध संबंध बन गए थे। जिसकी जानकारी लगने पर कैलाश उसे लेकर गांव वापस आ गया था।

आरोपी पत्नी तथा मृतक

जून 2025 की बात है। नारेला गांव के आदिवासी किसान कैलाश माल की शादी धूमधाम से हुई थी। 26 साल के कैलाश की दुल्हन सीमा (काल्पनिक नाम) उससे 10 साल छोटी महज 16 साल की थी। सीमा भले ही 16 की थी लेकिन अपनी शादीशुदा सहेलियों से सुनी कहानियों ने उसे शादी के रिश्ते का मतलब पहले ही समझा दिया था। इसलिए नाबालिग होकर भी उसने अपने पति को कभी शिकायत का मौका नहीं दिया।

लेकिन यह प्यार ज्यादा दिन नहीं टिक पाया। शादी के कुछ ही हफ्तों बाद दोनों के बीच अनबन शुरू हो गई। दरअसल सीमा को 12 साल की उम्र से ही अश्लील फिल्में देखने का शौक लग गया था। इसलिए वह चाहती थी कि उसका पति भी उसे उसी तरह प्यार करे जैसा फिल्मों में मर्द अपने साथ वाली औरतों के संग करते है। कैलाश को यह सब पसंद नहीं था। इसलिए उसने ऐसा करने से न केवल मना कर दिया बल्कि पत्नी को भी सख्त हिदायत दी कि वह आज के बाद ऐसी गंदी चीजों से दूर रहे। लेकिन नाबालिग सीमा कहां मानने वाली थी। वह प्यार के दौरान कैलाश के सामने अपनी मांगे रखने लगी। कैलाश मना करता तो दोनों के बीच छोटी-छोटी बातों पर झगड़े होने लगे। इतना होने के बाद भी सीमा ने अपना शौक नहीं छोड़ा तो कैलाश कभी कभी गुस्से में आकर उसके साथ मारपीट करने लगा।

घर में रोज झगड़े होने लगे तो कैलाश पत्नी को लेकर गुजरात चला गया जहां के एक शहर मोरबी में वे एक साथ काम करने चले गए। कैलाश को उम्मीद थी कि नए माहौल में सब ठीक हो जाएगा, लेकिन यहां तो उल्टा हुआ। मोरबी में सीमा की मुलाकात कुछ युवकों से हुई। धीरे-धीरे उसकी दोस्ती एक युवक से बढ़ गई। मोबाइल पर बातें होने लगीं। जब कैलाश को इसका पता चला, तो वह उसे लेकर वापस गांव आ गया। मगर सीमा को अब दूसरे युवकों की आदत लग चुकी थी। इसलिए गांव लौटने के बाद सीमा दो बार घर से भागने में की कोशिश कर चुकी थी। एक बार वह शौच जाने के बहाने मोरबी के लिए निकल गई, लेकिन परिवार वालों ने पीछा करके पकड़ लिया। दूसरी बार वह रात के अंधेरे में स्टेशन पहुंच गई थी, लेकिन पुलिस की मदद से उसे वापस लाया गया। इस बार उसके मायके वालों को भी बुलाया गया। उन्होंने उसे समझाया लेकिन सीमा के मन में कैलाश के लिए नफरत बीज बोया जा चुका था। 27 जनवरी को गांव में एक और शादी थी। कैलाश के चचेरे भाई की बारात थी। पूरे दिन घर में चहल-पहल रही। मामेरा की रस्म पूरी हुई, शराब का दौर चला और देर रात तक डीजे की धुन पर जमकर नाच-गाना हुआ। सीमा और कैलाश भी इस दावत में शामिल हुए। लोगों ने देखा कि दोनों साथ में खाना खा रहे थे। सीमा डीजे पर जमकर थिरक रही थी। कैलाश भी मस्ती में था। किसी को अंदाजा नहीं था कि यह उनकी आखिरी साथ वाली शाम है। रात करीब 2 बजे तक चले इस आयोजन के बाद सब अपने-अपने घरों को लौट गए। कैलाश और सीमा भी अपने घर आ गए। लेकिन घर पहुंचते ही माहौल बदल गया। सीमा ने काफी शराब पी थी इसलिए नशे में डूबी सीमा ने उस रोज कैलाश को अश्लील फिल्म की तरह प्यार करने कहा। इसी बात को लेकर दोनों के बीच लेकर झगड़ा हो गया। जिसके बाद कैलाश चुपचाप सो गया लेकिन 16 साल की सीमा वासना की आग में जल रही थी इसलिए उसने मन ही फैसला कर लिया।

इसके बाद जब गांव में सन्नाटा पसर गया, तब सीमा ने अपनी योजना पर अमल किया। कैलाश गहरी नींद में सो चुका था। शराब और थकान ने उसे बेसुध कर दिया था। सीमा ने उसके पास रखी रस्सी उठाई और पति की गर्दन में कस कर उसकी हत्या करने के बाद शव को कंबल से ढक दिया। पति की हत्या के बाद उसके चेहरे पर एक अजीब सी शांति थी, जैसे उसने कोई बड़ा बोझ उतार दिया हो।

अगले दिन 28 जनवरी सुबह बारात निकलने वाली थी। सीमा के पास समय कम था। उसने आईना सामने रखा और श्रृंगार करना शुरू किया। चूड़ियां पहनीं, मांग में सिंदूर भरा, पलकों पर काजल लगाया और लाल साड़ी पहनी। यह सब करते वक्त उसके सामने कंबल से ढका कैलाश का शव पड़ा था वह आखिरी गवाह जो अब कुछ नहीं बोल सकता था। इसी बीच उसकी भतीजी बीजू वहां आ गई। बीजू ने बताया कि काका को दादा बुला रहे हैं। सीमा ने बड़ी ही शांति से जवाब दिया, सो रहे हैं। मना किया है, उन्हें मत जगाना। बारात में नहीं जाएंगे। अगर जगाए तो झगड़ा करेंगे। शेष पृष्ठ 7 पर...

पति की हत्या के बाद शादी में शराब पीकर नाची

शादी के समय आरोपी और मृतक

रात में पति की हत्या कर सीमा ने कैलाश का शव कंबल से ढक कर रख दिया। इसके बाद लाश के बगल में बैठकर उसने पूरा श्रृंगार किया और फिर भतीजे की शादी में शामिल होने पड़ोस में चली गई जहां उसने शराब पीकर खूब डांस किया। गांव वालों का कहना है कि भरोसा नहीं होता कि 16 साल की लड़की बरात करने के बाद भी इतनी सामान्य रह सकती है।

...पृष्ठ 2 का शेष

बीजू ने चाची की बात मान ली जिसके बाद दोनों तैयार होकर शादी वाले घर पहुंच गईं। शादी वाले घर में डीजे बज रहा था। सीमा ने सबसे पहले बीयर की बोतल मांगी। उसने एक लंबा घूंट लिया, जैसे किसी बुरी याद को धोने के लिए शराब का सहारा लिया हो। फिर वह डीजे की धुन पर थिरकने लगी। महिलाओं की टोली में वह सबसे आगे थी। घूंघट डाले, मांग में सिंदूर लगाए वह नाच रही थी एक ऐसा नाच जिसमें उसके पति की मौत का खूनी रहस्य छिपा था। कैलाश की बड़ी बहन लीला भी वहां मौजूद थी। उसने सीमा से कैलाश के बारे में पूछा लेकिन सीमा ने सीधा जबाव नहीं दिया। इससे लीला को कुछ अटपटा लगा। वह सीधे कैलाश के घर पहुंची। कमरे में कंबल ओढ़े कैलाश लेटा था। लीला ने आवाज देते हुए कंबल हटाया तो सब समझते हुए उसने शोर मचा दिया। लीला की चीख सुनकर शादी वाले घर में हड़कंप मच गया। डीजे अचानक बंद हो गया। सब लोग दौड़ते हुए कैलाश के घर पहुंचे। सीमा भी दौड़ती हुई आई और फूट-फूट कर रोने लगी। पुलिस को सूचना दी गई। फोरेंसिक टीम आई, शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया। शुरुआती रिपोर्ट में गला दबाकर हत्या की पुष्टि हुई। पुलिस ने सीमा से पूछताछ की, लेकिन वह अपनी बात पर अड़ी रही पता नहीं कैसे हुआ, रात को तो ठीक थे। लेकिन पुलिस ने सख्ती की तो सारा मामला साफ हो गया। अगले दिन सीमा को गिरफ्तार कर लिया गया। वह नाबालिग थी, इसलिए उसे किशोर न्याय बोर्ड के सामने पेश कैलाश के परिवार वाले इस बात से सहमत नहीं हैं कि सीमा ने अकेले यह सब किया है। परिवार के अनुसार कैलाश हट्टा-कट्टा था इसलिए इतनी छोटी-सी लड़की उनका क्या बिगाड़ सकती थी। परिवार वालों का आरोप है कि मोरबी में सीमा की जिस युवक से दोस्ती हुई थी, वह भी इस हत्या में शामिल हो सकता है।

कहानी पुलिस सूत्रों पर आधारित सभी नाम बदले हुए हैं।

● ● ●

...पृष्ठ 6 का शेष

शर्म और बदनामी के डर ने उसे अंदर ही अंदर खोखला कर दिया था। सत्यमदास का दबाव दिन-ब-दिन बढ़ता जा रहा था। वह लगातार उसे मिलने के लिए बुलाता और संबंध बनाने की मांग करता।

आखिरकार, अमर ने तय कर लिया कि इस परेशानी से छुटकारा पाने का एक ही रास्ता है सत्यमदास की हत्या। उसने पूरी योजना बनाई। उसने घर से एक धारदार चाकू चुरा लिया। 17 जनवरी की शाम को उसने सत्यमदास को फोन करके लालपुर नर्सरी के पीछे मिलने को कहा। उसने बताया कि वह उससे बात करना चाहता है और उसकी बात मानने को तैयार है। यह सुनकर सत्यमदास खुश हो गया और शाम को लालपुर नर्सरी पहुंच गया।

चारों तरफ सन्नाटा पसरा हुआ था। दूर-दूर तक कोई नहीं था। अमर पहले से ही वहां मौजूद था। सत्यमदास ने जैसे ही वहां पहुंचा अमर को देखकर मुस्कराते हुए अपने कपड़े खोलते हुए अमर से भी कपड़े हटाने को कहा। आने वाले सुख के पलों के लिए सत्यमदास पागल हुआ जा रहा था लेकिन उसे क्या पता था कि सुख उठाने से पहले मौत उसे उठाने वाली है।

कमऑन यार जल्दी कपड़े हटाओ, यह कहते हुए अर्धनग्न सत्यमदास ने अमर का हाथ पकड़कर उसे अपनी ओर खींचा। इसी मौके का फायदा उठाकर अमर से अपनी जेब से चाकू निकालकर सत्यमदास पर झपट पड़ा। उसने पहला वार सत्यम के पेट पर, फिर सीने पर और आखिरी वार गले पर किया। खून की फव्वारा छूट गई और सत्यमदास लहूलुहान होकर जमीन पर गिर पड़ा।

अमर कुछ देर वहां खड़ा अपने किए पर कांपता रहा। उसके हाथ और कपड़े खून से सने थे। उसे एहसास हुआ कि उसने क्या कर दिया है। लेकिन उसे पछतावा नहीं था। उसे लगा जैसे उसके सीने से बोझ उतर गया हो। उसने जल्दी से सबूत मिटाने की कोशिश की। उसने सत्यमदास की जेब से मोबाइल निकाला और उसकी सिम निकाल दी। फोन और सिम को अलग-अलग करके उसने पास की नदी में फेंक दिया। फिर वह अपनी स्कूटी पर बैठा और वहां से फरार हो गया।

अमर ने सोचा था कि उसने सबूतों को पूरी तरह मिटा दिया है, लेकिन पुलिस की जांच उसके गुमान से कहीं आगे थी। पुलिस ने सीसीटीवी फुटेज में उसकी स्कूटी को घटनास्थल के आसपास जाते देखा। कॉल डिटेल एनालिसिस में भी उसका नंबर मृतक के संपर्क में पाया गया। जब पुलिस ने अमर को हिरासत में लिया और सख्ती से पूछताछ की, तो वह टूट गया। उसने रोते हुए पूरी कहानी कबूल कर ली। उसने बताया कि कैसे सत्यमदास उसे ब्लैकमेल करता था और उसके साथ हैवानियत करता था। पुलिस ने अमर की निशानदेही पर वह चाकू बरामद कर लिया, जिसे उसने एक झाड़ी में छुपा दिया था। खून से सने उसके कपड़े भी मिल गए, जिन्हें उसने एक बोरी में बंद करके अपने घर के पीछे दबा दिया था। पुलिस ने उसकी स्कूटी और नदी से मृतक का मोबाइल फोन भी बरामद कर लिया।

कहानी पुलिस सूत्रों पर आधारित सभी नाम बदले हुए हैं।

● ● ●

...पृष्ठ 8 का शेष

लेकिन अगले ही दिन 17 मार्च को सुबह लगभग साढे दस बजे निकिता का फोन बजा। स्क्रीन पर नंबर देखकर वह चौंकी अर्जुन सुगंधी का फोन था। उसने उठाया तो दूसरी तरफ से अर्जुन की आवाज आई, निकिता, क्या बात है? तुम कल क्यों नहीं आईं? सब ठीक है? निकिता ने संक्षेप में बता दिया, अर्जुन भैया, मैं अब वहां नहीं आ सकती। अजय भैया मुझे परेशान करते हैं, इसलिए मैंने नौकरी छोड़ दी है। फोन पर कुछ पल की खामोशी रही। फिर अर्जुन ने कहा, देखो निकिता, मैं समझ गया। लेकिन एक बार तुम यहां आ जाओ। बातचीत से सब ठीक हो जाएगा। मैं अजय भैया से बात करूंगा। तुम्हारा हिसाब-किताब भी बाकी है, तनख्वाह देनी है। बस एक बार आकर मिल लो।

निकिता ने स्नेहा से सलाह ली। स्नेहा ने कहा, दीदी, मैं तुम्हारे साथ चलूंगी। जल्दी बात करके वापस आ जाते हैं। इसके बाद दोनों बहनें दोपहर 12 बजे राजकुमार फर्नीचर पर पहुंची। दुकान के अंदर माहौल तनावपूर्ण था। अर्जुन और उसकी भाभी (अजय की पत्नी) पहले से मौजूद थे। अजय कहीं नजर नहीं आ रहा था। जैसे ही निकिता अंदर दाखिल हुई, अर्जुन की भाभी ने उसे देखते ही चिल्लाना शुरू कर दिया।

आ गई तुम, बहुत शौक है तुझे मर्दों को फंसाने का? मेरे पति को तूने ही बहकाया है, नहीं तो वह क्यों तेरे पीछे पड़ेगा?

निकिता ने हैरानी से कहा, भाभी जी, आप क्या कह रही हैं? मैंने किसी को नहीं बहकाया। मैं तो अपनी तनख्वाह लेने आई थी, बस।

तनख्वाह? तू हमारे घर की शांति छीन रही है और तुझे तनख्वाह चाहिए? कहते हुए अर्जुन की भाभी ने निकिता के बाल पकड़ लिए और मारपीट शुरू कर दी।

स्नेहा की मदद से निकिता ने किसी तरह अपने बाल छुड़ाए और दुकान के बाहर की ओर भागी। उसका चेहरा खरोंचों से लहूलुहान हो चुका था। वह चिल्लाई, मैं पुलिस में रिपोर्ट करूंगी! यह सुनते ही अर्जुन की आंखों में आग भड़क उठी। पुलिस का नाम सुनते ही उसके पैरों तले जमीन खिसक गई। अगर यह लड़की पुलिस में शिकायत कर देगी, तो उनके परिवार की बदनामी होगी, उनके तीनों फर्नीचर शोरूम का क्या होगा? शहर में मुंह दिखाने लायक नहीं रहेंगे। अर्जुन ने एक पल में फैसला किया। उसकी नजर दुकान के कोने में रखे धारदार हथियार पर पड़ी, जिसका इस्तेमाल वह सोफे की लकड़ी काटने के लिए करता था। बिना कुछ सोचे उसने वह हथियार उठाया और दौड़कर निकिता के पास पहुंच गया। और अगले ही पल उसने पूरी ताकत से वार किया। धारदार हथियार निकिता के सीने में धंस गया। निकिता की आंखें फैल गईं। फिर वह धड़ाम से नीचे गिर गई। बहन की हालत देखकर छोटी बहन चीख पड़ी। जबकि अर्जुन हाथ से हथियार गिराकर खड़ा रह गया। उसकी भाभी ने पीछे का दरवाजा खोला और अपने घर की ओर भाग गई। जब यह बात अजय को पता चला तो वह भी परिवार के बाकी सदस्यों को लेकर कहीं फरार हो गया। इसी बीच स्नेहा ने कांपते हाथों से अपनी मां को फोन लगाकर पूरी बात बता दी। इसी बीच सूचना पाकर मौके पर पहुंचे परिजनों ने किसी तरह एम्बुलेंस बुलाकर निकिता को अस्पताल पहुंचाया। जहां उसे मृत घोषित कर दिया गया। स्नेहा ने पुलिस को सारी बात बताई। गणपति थाना प्रभारी सुरेश महाले ने तुरंत कार्रवाई करते हुए पुलिस टीम को भेजा। अर्जुन अभी भी दुकान में ही खड़ा मिला। वह भागा नहीं था, जैसे उसे पता था कि अब भागने से कुछ नहीं होगा। पुलिस ने उसे गिरफ्तार कर अगले दिन अदालत में पेश किया जहां से उसे जेल भेज दिया गया।

कहानी पुलिस सूत्रों पर आधारित सभी नाम बदले हुए हैं।

● ● ●

...पृष्ठ 3 का शेष

यविता को लगा जैसे बिजली का करंट दौड़ गया हो। वह चीखते हुए बोली, तुम पागल हो गए हो? मैं ऐसा कुछ नहीं करूंगी। उसने फोन काट दिया। उस रात वह सो नहीं पाई। उसे लगा कि अब सच में उसकी फोटो वायरल हो जाएंगी। वह अपने पिता का मुंह कैसे दिखाएगी, पड़ोसी क्या कहेंगे, उसकी जिंदगी बर्बाद हो जाएगी।

लेकिन अगले दिन कुछ नहीं हुआ। उसके बाद भी कई दिनों तक कुछ नहीं हुआ। यविता ने सोचा शायद साहिल डर गया है। उसने अपनी पढ़ाई पर ध्यान देना शुरू कर दिया। लेकिन 4 मार्च को होली के दिन शाम करीब 5 बजे साहिल ने उसे फोन कर कहा मैं बरगी नगर में हूं। होली पर घर आया हूं। तुमसे मिलना है।

यविता ने कहा, मैं तुमसे नहीं मिल सकती।

साहिल ने धमकी भरे लहजे में कहा, तो क्या अब मैं सारे फोटो वायरल कर दूं? तुम्हारे पिता को, तुम्हारे कॉलेज वालों को, सबको भेज दूं?

यविता की सांसें तेज हो गईं। ठीक है... कहां मिलना है?

साईं मंदिर के पास। 15 मिनट में।

यविता ने घर से निकलते हुए अपनी एक सहेली को लोकेशन भेज दी और कहा अगर मैं एक घंटे में वापस न आऊं तो पुलिस को फोन कर देना।

यविता जब साईं मंदिर पहुंची तो वहां पहले से ही एक युवक खड़ा था। औसत कद-काठी, साधारण कपड़े। कोई खास बात नहीं। उसने यविता को देखा और मुस्कुराया। वह मुस्कान यविता को बेहद अजीब लगी।

साहिल ने कहा, चलो, थोड़ी दूर चलते हैं। यहां भीड़ है।

यविता ने कहा, नहीं, यहीं बात करो। क्या चाहिए तुम्हें?

साहिल ने कहा, बारह हजार रुपए चाहिए। जल्दी दो।

यविता ने कहा, मेरे पास पैसे नहीं हैं। तुमने मुझसे 50 हजार ले लिए। अब और नहीं दे सकती।

साहिल ने जैसे सुना ही नहीं। देखो, अगर आज पैसे नहीं दिए तो कल सुबह तुम्हारे पिता के फोन पर तुम्हारे फोटो होंगे। समझी?

यविता की आंखों में आंसू आ गए। उसने अपने बैग से 12 हजार रुपए निकाले। यह पैसे उसने अपनी दादी से कॉलेज फीस के लिए लिए थे। उसने साहिल को पैसे दिए और बिना एक शब्द कहे वहां से चली गई।

रास्ते भर वह सोचती रही अब और नहीं। अब बस। जिसके बाद यविता 11 मार्च को बरगी थाना प्रभारी सुश्री पटेल के पास जा पहुंची और उन्हें पूरी बात बता दी।

थाना प्रभारी सरिता पटेल ने तुरंत मामले की जानकारी एसपी संपत उपाध्याय को देकर उनके निर्देश पर मामला दर्ज कर आरोपी को पकड़ने के लिए जाल बिछाना शुरू कर दिया।

सबसे पहले थाना प्रभारी सरिता पटेल साहिल के घर पहुंचीं। उसके पिता ने बताया, साहिल नागपुर में रहता है। होली में आया था, कल ही वापस चला गया। इस पर पुलिस ने तुरंत नागपुर के लिए टीम रवाना की। नागपुर में वह एक प्राइवेट कंपनी में नौकरी करता था। इसलिए शाम को जब वह कमरे पर लौटा, तो पुलिस ने उसे दबोच लिया।

कमरे की तलाशी ली गई तो पुलिस हैरान रह गई। साहिल के पास से दो मोबाइल फोन, तीन पेन ड्राइव और 8 सिम कार्ड मिले। जब इनकी जांच की गई, तो पुलिस के होश उड़ गए। एक पेन ड्राइव में 250 से ज्यादा लड़कियों के फोटो और वीडियो थे। वे लड़कियां मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश और छत्तीसगढ़ की थीं। कई लड़कियों के साथ उसके अश्लील चैट के स्क्रीनशॉट भी थे। इंस्टाग्राम पर उसकी 100 से ज्यादा लड़कियों के नाम से फेक आईडी थीं।

पूछताछ में पता चला कि साहिल विश्वकर्मा बरगी नगर का रहने वाला, ग्रेजुएट था। उसके पिता ड्राइवर थे, मां घरेलू महिला और एक छोटी बहन थी। पढ़ाई में औसत, लेकिन कंप्यूटर और सोशल मीडिया में उसे महारत हासिल थी। उसने बताया कि सबसे पहले मैं इंस्टाग्राम पर लड़कियों के नाम से फेक आईडी बनाता था। किसी लड़की की असली फोटो लगा देता था। फिर उस आईडी से दूसरी लड़कियों को रिक्वेस्ट भेजता था। लड़कियां लड़की को देखकर आसानी से एक्सेप्ट कर लेती थीं।

बातचीत शुरू होती थी। मैं उनसे उनके परिवार, दोस्तों, बॉयफ्रेंड के बारे में पूछता था। धीरे-धीरे उनकी पर्सनल लाइफ के बारे में सब कुछ जान लेता था। फिर एक दिन उन्हें कॉल करके बताता था कि उनके प्रेमी के बारे में मुझे सब पता है, या उनकी कोई पर्सनल बात पता है। डर के मारे वे पैसे दे देती थीं।

जो पैसे नहीं देती थीं, उन्हें मैं धमकी देता था कि तुम्हारे पिता या भाई को बता दूंगा कि तुम किसी लड़के से मिलती हो। कई लड़कियां इस डर से मेरे साथ शारीरिक संबंध बनाने को तैयार हो जाती थीं।

जब पुलिस ने पूछा कि उसने कितनी लड़कियों को ब्लैकमेल किया, तो उसने बेधड़क कहा, 100 से ज्यादा। पैसे का हिसाब नहीं है। हर्षित मेरा वाला मामला पूछे जाने पर वह हंसा, हर्षित मेरा दोस्त है। मुझे पता था कि यविता उससे पहले मिलती थी और अब बात नहीं होती। यह सबसे आसान तरीका था। मैंने हर्षित के नाम से इंस्टाग्राम आईडी बनाई, उसकी फोटो लगाई। यविता ने मुझे बिना सोचे एक्सेप्ट कर लिया।

कहानी पुलिस सूत्रों पर आधारित सभी नाम बदले हुए हैं।

● ● ●

कर्वधा | अप्राकृतिक रिश्तों के शौकीन मास्टर को छात्र ने उतारा मौत के घाट

गंदी बात

demo pic.

demo pic.

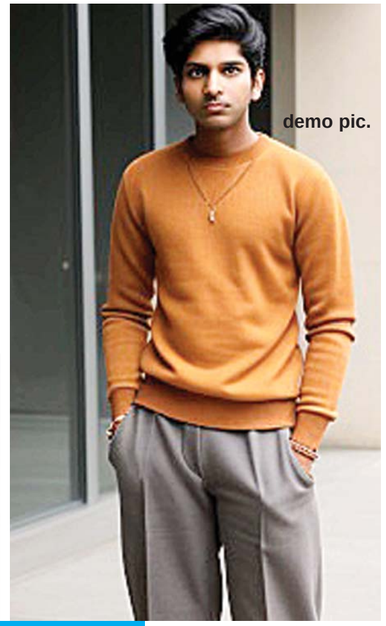

कर्वधा के विभिन्न नामी स्कूलों में छात्र-छात्राओं को शास्त्रीय नृत्य की शिक्षा देने वाला सत्यमदास वास्तव समलैंगिक था। उसने नृत्य सिखाने के दौरान कई किशोर युवकों को अपनी वासना का शिकार बनाया लेकिन उसे नहीं मालूम था कि एक दिन यह गंदी आदत उसकी हत्या का कारण बन जाएगी।

कर्वधा में 17 जनवरी की रात को असामान्य रूप से सर्द होने के कारण पूरे इलाके में सन्नाटा पसरा हुआ था। शायद यह आने वाले तूफान से पहले की शांति थी। ऐसे में शहर के बाहर लालपुर नर्सरी के पीछे की सुनसान सड़क पर एक बाइक खड़ी थी। पास ही में, झाड़ियों के बीच, एक युवक का खून से लथपथ शव पड़ा कराह रहा था।

मृतक सत्यमदास

उसे उम्मीद थी कि शायद किसी राहगीर की नजर उस पर पड़ जाए और वो उसे अस्पताल पहुंचा दे। क्योंकि उस युवक में इतनी भी शक्ति नहीं थी कि वह झाड़ियों से निकलकर किसी तरह कम से कम सड़क तक आ सके जहां से इक्का-दुक्का वाहन गुजर रहे थे। लेकिन दुर्भाग्य से ऐसा नहीं हुआ इसलिए तेज ठंड में उस घायल की रात में ही मौत हो गई।

सुबह होते ही लोगों ने शव को देखा तो यह खबर कर्वधा शहर में आग की तरह फैल गई। पुलिस के प्रयासों मृतक की पहचान 27 वर्षीय सत्यमदास मानिकपुरी के रूप में हुई, जो शहर का एक जाना-माना नृत्य प्रशिक्षक था। वह निजी स्कूलों में कथक सिखाता था। उसकी कला के कद्रदान बहुत थे, लेकिन उसकी जिंदगी के उस पार्ट के बारे में बहुत कम लोग जानते थे, जो उसे इस मुकाम तक ले आया। पुलिस के लिए यह एक पेचीदा पहेली थी। न तो कोई प्रत्यक्ष गवाह था, और न ही कोई सीधा सुराग। मौके पर बिखरे खून के धब्बे और एक बेजान शरीर के अलावा कुछ नहीं था। कोतवाली पुलिस ने तुरंत मामला दर्ज किया और जांच शुरू की। शव के प्रारंभिक निरीक्षण से पता चला कि हत्या किसी धारदार हथियार, संभवतः चाकू से की गई थी। गले पर गहरा वार था, जिससे उसकी मौत हो गई। पुलिस टीम ने आसपास के इलाके की घेराबंदी की और छानबीन शुरू कर दी। एसपी ने मामले को गंभीरता से लेते हुए कई टीमों का गठन किया। एक टीम तकनीकी साक्ष्य जुटाने में लगी थी, तो दूसरी टीम मृतक के परिचितों और संदिग्ध लोगों से पूछताछ कर रही थी।

मृतक सत्यमदास के बारे में पुलिस को जानकारी मिली कि वह एक सामान्य और कलाप्रेमी युवक था। लेकिन उसके मोबाइल फोन की कॉल डिटेल और सोशल मीडिया एक्टिविटी ने पुलिस को एक अलग रास्ता दिखाया। सत्यमदास के कई युवा लड़कों से गहरे संबंध थे। यह भी पता चला कि वह उनमें से कुछ के साथ अप्राकृतिक संबंध रखता था। पुलिस की जांच का दायरा अब इसी ओर मुड़ गया। क्या हत्या की वजह कोई पुरानी रंजिश या ब्लैकमेलिंग तो नहीं?

पुलिस ने पूरे शहर में लगे 500 से अधिक सीसीटीवी कैमरों के फुटेज खंगालने शुरू कर दिए। घटना के आसपास के इलाके में आने-जाने वाली हर गाड़ी, हर शख्स पर नजर रखी जा रही थी। साथ ही, करीब 5 हजार मोबाइल नंबरों की कॉल डिटेल का विश्लेषण किया गया। टीम ने 100 से अधिक लोगों से पूछताछ की, कई संदिग्धों को हिरासत में लिया गया, लेकिन सबूतों के अभाव में छोड़ना पड़ा।

अनेक स्कूलों में बच्चों को सिखाता था नृत्य

मृतक सत्यमदास शहर कर जाना माना नृत्य शिक्षक था। वह कई स्कूल में बच्चों को भरतनाट्यम नृत्य सिखाता था। वह घर पर प्राइवेट क्लास भी चलाता था जहां शहर की अनेक युवक युवतियां उसने डांस सीखने आते थे। पुलिस को शक है कि उसने अमर की तरह और भी कई किशोरों को शोषण किया होगा।

घर बुलाकर बनाए थे संबंध : अपचारी नाबालिग ने पुलिस को बताया कि स्कूल में डांस सिखाते समय सत्यमदास मेरे डांस की काफी तारीफ करता था। इसके बाद एक रोज उसने एक्सट्रा स्टेप सिखाने के बहाने मुझे अपने घर आने को कहा। संडे के रोज में उसके घर पहुंचा तो उसने मुझे काफी मिठाई आदि खाने को दी। इसके बाद डांस सिखाते समय वह बार-बार मेरे पेट की जिप को छूने लगा। मुझे अजीब लगा लेकिन मैने इस पर ध्यान नहीं दिया। कुछ देर बाद वह थक जाने का कहकर अंदर कमरे में पड़े पलंग पर लेट गया साथ ही उसने मुझे भी आराम करने कहा। इस पर मैंने घर जाने की बात कहीं तो वह बोला अभी वह एक बार और मुझे ट्रेनिंग देगा। उसकी बात सुनकर मैं पलंग पर एक तरफ बैठ गया लेकिन उसने मुझे पलंग पर खींच लिया और फिर गंदी हरकत करने लगा। मैंने उसे बहुत रोका लेकिन वह नहीं माना और मेरे साथ गंदा काम किया।

घटना का खुलासा करती पुलिस

मना करने पर करता था ब्लैकमेल

पीड़ित किशोर ने बताया कि उसे सत्यमदास के इस आचरण से नफरत होने लगी थी। उसने डांस क्लास भी छोड़ दी थी लेकिन वह मेरे बारे में सबको बता देने की धमकी देकर मुझे अपना साथ देने मजबूर करता था। उसका कहना था कि अगर मैंने उसके साथ संबंध नही बनाए तो वह स्कूल में दूसरे बच्चों को यह बात बता देगा इसलिए उससे पीछा छुड़ाने मैंने उसकी हत्या कर दी।

एक महीना बीत गया, फिर दो महीने। जनवरी की ठंड ने फरवरी की सिहरन को जन्म दिया और अब मार्च का महीना शुरू हो रहा था। मीडिया में यह खबर धीरे-धीरे ठंडी पड़ने लगी थी। आम जनता की नजरों में यह एक अनसुलझा मामला बनता जा रहा था। पुलिस की विश्वसनीयता पर सवाल उठने लगे थे। ऐसे में एसपी ने टीम को और कड़ी मेहनत करने के निर्देश दिए और हत्यारे की सूचना देने वाले के लिए 10 हजार रुपये का इनाम घोषित कर दिया।

इसी बीच, पुलिस की साइबर टीम मृतक और उसके संभावित संपर्कों की इंटरनेट गतिविधियों पर बारीकी से नजर रख हुए थी। तभी उन्हें एक युवा लड़के की प्रोफाइल मिली, जो सत्यमदास के सोशल मीडिया अकाउंट से काफी समय से जुड़ा हुआ था। उसकी गतिविधियों और पोस्ट से लग रहा था कि वह बहुत मानसिक तनाव में है। उसकी इंटरनेट सर्च हिस्ट्री ने पुलिस की आंखें खोल दीं।

यह लड़का कोई और नहीं बल्कि दसवीं कक्षा में पढ़ने वाला एक 16 वर्षीय किशोर अमर (काल्पनिक नाम) था। पुलिस को उस पर शक हुआ और उसके बारे में गहराई से जानकारी जुटानी शुरू की। पता चला कि अमर एक साधारण परिवार से था और कुछ महीने पहले ही उसकी मुलाकात सत्यमदास से एक नृत्य प्रतियोगिता के दौरान हुई थी। सत्यमदास ने उसकी प्रतिभा देखकर उसे प्रशिक्षण देने की बात कही थी।

पुलिस ने अमर से पूछताछ की। पहले तो वह घबरा गया, लेकिन धीरे-धीरे उसने अपना दर्द भरा किस्सा बयान कर दिया। करीब तीन महीने पहले सत्यमदास ने अमर को बहला-फुसलाकर उसके साथ अप्राकृतिक संबंध बनाए। अमर अनुभवहीन था और उसने इसे एक गलती समझकर भूलने की कोशिश की, लेकिन सत्यमदास अब उसका पीछा करने लगा। वह अमर को बार-बार ब्लैकमेल करता था। धमकी देता था कि अगर उसने उसकी बात नहीं मानी तो वह उसके घरवालों और स्कूल में उनके रिश्ते की फोटो और बातें फैला देगा।

अमर की जिंदगी नरक बन गई थी। वह एक ओर अपनी पढ़ाई और भविष्य को लेकर चिंतित था, तो दूसरी ओर सत्यमदास का डर उसे खाए जा रहा था। उसकी नींद उड़ गई थी। वह हर समय तनाव में रहने लगा था। उसे लगता था कि उसके पास कोई रास्ता नहीं है। न तो वह अपने परिवार को यह बता सकता था, न ही पुलिस के पास जा सकता था।

शेष पृष्ठ 7 पर...

जबलपुर | पकड़ा गया सोशल मीडिया का शातिर खिलाड़ी, लड़की बनकर दोस्ती करने के बाद करता था ब्लैकमेल और रेप

अनोखी फिरौती

बेहद शातिर है आरोपी

बरगी थाना प्रभारी सरिता पटेल का कहना है कि साहिल बेहद शातिर है। वह लड़कियों की मानसिकता को भली-भांति समझता है। उसे पता था कि लड़कियां बदनामी से सबसे ज्यादा डरती हैं, और वह इसी डर का फायदा उठाता था। इसने 250 से ज्यादा लड़कियों की तस्वीरें अपने पास रखी हैं। हम इन तस्वीरों के जरिए बाकी पीड़ित लड़कियों को ढूंढने की कोशिश कर रहे हैं। कई लड़कियां शायद अब भी डर के मारे चुप हैं।

demo pic.

शातिर साहिल पहले लड़की के फर्जी नाम से सोशल मीडिया पर किसी लड़की से गहरी दोस्ती करने के बाद उसे अपने काल्पनिक प्रेम संबंध के बारे में बता कर सामने वाली युवती से उसके प्रेम संबंध की जानकारी हासिल कर लेता। युवती के प्रेम संबंध की जानकारी हाथ लग जाने के बाद साहिल उसके प्रेमी का दोस्त बनकर सब कुछ जानने की धमकी देकर युवती को न केवल पैसों के लिए ब्लैकमेल करता बल्कि जो युवती पैसा नहीं दे पाती उससे फिरौती में बलात्कार करता था।

शातिर आरोपी साहित

सौ से ज्यादा लड़कियों को ठगा, कईयों के साथ बनाए संबंध

पुलिस गिरफ्त में आरोपी

पूछताछ में साहिल ने स्वीकार किया कि उसने इसी तरीके से लगभग एक सौ से अधिक लड़कियों को ठगा है। कई लड़कियां पैसा नहीं दे सकी इसलिए उसने पैसों के एवज में उनके साथ शारीरिक संबंध का सौदा किया जिनमें से कुछ राजी हो गई। पुलिस अब साहिल के सभी सिम कार्ड और मोबाइल नंबरों की डिटेल निकाल रही है। जितनी भी लड़कियों के नंबर और फोटो मिले हैं, उनसे संपर्क किया जा रहा है। कई लड़कियां पहले तो कुछ बताने से कतराती हैं, लेकिन जब पुलिस उन्हें समझाती है कि वे भी पीड़ित हैं और उन्हें आगे आना चाहिए, तो कुछ राजी हो जाती हैं। एक लड़की ने बताया कि साहिल ने उसे 6 महीने तक ब्लैकमेल किया। उसने 1.5 लाख रुपए दे दिए थे। एक दूसरी लड़की ने बताया कि वह साहिल के साथ शारीरिक संबंध बनाने को मजबूर हुई थी।

11 मार्च की सुबह जबलपुर में बरगी नगर पुलिस चौकी चौकी प्रभारी सरिता पटेल अपने केबिन में बैठी कल की एफआईआर देख रही थीं कि तभी बाहर से किसी के रोने की आवाज आई। उन्होंने सिर उठाकर देखा तो एक युवती, हाथ में रूमाल दबाए, सुकचाते हुए अंदर दाखिल हो रही थी। उसकी आंखें सूजी हुई थीं और चेहरे पर असीम पीड़ा थी। युवती को अंदर बुलाकर सुश्री पटेल ने उससे थाने आने का कारण पूछा इस पर युवती ने धीरे से कहा मैम मुझे एक लड़का मुझे बहुत परेशान कर रहा है। उसकी बात सुनकर थाना प्रभारी ने उसे पूरी बात विस्तार से बताने को कहा।

इस पर 23 साल की एमबीए स्टूडेंट यविता (काल्पनिक नाम) ने बताया कि वह बरगी नगर इलाके में अपने पिता के साथ रहती थी। उसकी मां का देहांत पांच साल पहले हो चुका था। पिता एक निजी कंपनी में काम करते हैं। पिता बेटी को पढ़ाने में कोई कसर नहीं छोड़ रहे थे। यविता भी मेहनती थी और उसके अच्छे नंबर आते थे। वह अपने करियर को लेकर काफी गंभीर थी।

करीब आठ महीने पहले उसकी दोस्ती हर्षित मिश्रा से हुई थी। हर्षित उसके एक दोस्त का दोस्त था। दोनों में अच्छी बातचीत होती थी, कभी-कभार मुलाकात भी हो जाती थी। लेकिन करीब आठ महीने से उनकी बातचीत बंद थी। हर्षित अपने काम में व्यस्त था और यविता अपनी पढ़ाई में। दोनों के बीच कोई झगड़ा नहीं हुआ था, बस दूरियां बढ़ गई थीं।

दिसंबर के पहले हफ्ते में यविता के इंस्टाग्राम पर एक फ्रेंड रिक्वेस्ट आई। नाम था हर्षित मिश्रा। प्रोफाइल फोटो में हर्षित की ही फोटो थी। यविता ने बिना सोचे रिक्वेस्ट एक्सेप्ट कर ली। कुछ देर बाद एक मैसेज आया।

हाय यविता, कैसी हो? बहुत दिनों बाद बात हुई।

यविता ने जवाब दिया, मैं ठीक हूं। तुम सुनाओ, कहां हो इन दिनों?

इस पर हर्षित ने बताया कि वह नागपुर में है और एक प्राइवेट जॉब कर रहा है। धीरे-धीरे बातचीत बढ़ी। यविता को कोई शक नहीं हुआ क्योंकि सामने वाला हर्षित के बारे में सब कुछ जानता था उसकी पिछली बातचीत, उनकी मुलाकातें, यहां तक कि उनके कॉमन दोस्तों के नाम भी।

इसके बाद 28 जनवरी को यविता के मोबाइल पर अननोन नंबर से फोन आया। फोन रिसीव करने पर सामने वाले ने अपना नाम साहिल बताते हुए कहा कि वह हर्षित का दोस्त है। यविता ने हैरानी से पूछा, हर्षित का दोस्त? आपका नाम पहले मैंने कभी सुना नहीं। एनी-वे बोलिए।

साहिल ने कहा, देखो, मैं सीधे बात करता हूं। हर्षित ने मुझे तुम्हारे कुछ फोटो और वीडियो दिए हैं। उसने कहा कि अगर पैसे मिलेंगे तो ये तुम्हें वापस मिल जाएंगे। मैंने उसे साढ़े आठ हजार रुपए दे दिए हैं। अब तुम मुझे मेरे पैसे वापस कर दो, तो मैं ये सारी चीजें तुम्हें दे दूंगा। साहिल की बात सुनकर यविता के होश उड़ गए। उसके पास कोई फोटो या वीडियो नहीं था, लेकिन सामने वाला कह रहा था कि उसके पास कुछ है। उसने घबराकर कहा, मैं हर्षित से बात करूंगी।

साहिल ने तुरंत कहा, नहीं, तुम हर्षित से बात मत करो। वह मुझे पैसे वापस नहीं करेगा। तुम मुझे मेरे पैसे दो, बस।

यविता बदनामी के डर से कांप गई। अगर उसके कोई फोटो या वीडियो वायरल हो गए तो उसका क्या होगा? उसकी पढ़ाई, उसका करियर, उसके पिता का भरोसा, सब कुछ खत्म हो जाएगा।

उसने कांपते हाथों से कहा, ठीक है... मैं दे दूंगी।

अगले ही दिन उसने साहिल को साढ़े आठ हजार रुपए ट्रांसफर कर दिए। उसने सोचा कि इससे बात खत्म हो जाएगी। लेकिन यह तो शुरुआत थी। लेकिन एक हफ्ते बाद फिर साहिल का फोन आया। इस बार साहिल ने कहा, देखो, मैंने अपने एक और दोस्त को ये फोटो दिखाए हैं। वह भी पैसे मांग रहा है। अगर तुमने उसे भी पैसे नहीं दिए, तो वह वायरल कर देगा।

यविता ने पूछा, कितने पैसे?

पंद्रह हजार।

यविता के पास इतने पैसे नहीं थे। उसने अपनी सहेली से उधार लिए और फिर से पैसे ट्रांसफर कर दिए।

इसी तरह हर हफ्ते कोई न कोई बहाना बनता। कभी साहिल कहता कि उसके दोस्त ने और दिखा लिए हैं, कभी कहता कि हर्षित और फोटो दे रहा है। यविता एक माह में लगभग 40-50 हजार रुपए दे चुकी थी। उसने अपनी पढ़ाई के लिए जो पैसे जमा किए थे, वे सब खत्म हो गए। उसने अपनी छोटी बहन के लिए जो जूलरी खरीदी थी, वह भी बेच दी। हर रात वह सोचती कि कल यह सिलसिला खत्म होगा। लेकिन हर सुबह एक नई धमकी के साथ होती।

18 फरवरी की रात में फिर साहिल का फोन आया तो यविता ने सख्त लहजे में कहा, मैं और पैसे नहीं दे सकती। तुमने मुझे बर्बाद कर दिया है। अब चाहे जो करो।

फोन पर कुछ पल की खामोशी रही। फिर साहिल ने धीमी, खतरनाक आवाज में कहा, अच्छा? तो अब पैसे नहीं देना चाहती? तो फिर एक रास्ता और है।

क्या रास्ता?

मुझसे मिलो। बस एक बार। मेरे साथ शारीरिक संबंध बनाओ। एक बार में ही मैं सारे फोटो-वीडियो डिलीट कर दूंगा। और तुम्हें फिर कभी परेशान नहीं करूंगा।

शेष पृष्ठ 7 पर...

पेज 1 से जारी

गढ़ाकोटा (सागर) का चर्चित सीमा कुर्मी हत्याकांड

बर्निंग कार

"हत्या का आत्महत्या का जामा पहनाने के लिए आरोपी डॉक्टर ने मृत पत्नी को इलाज के लिए सागर लाने के नाम पर रास्ते में उसकी लाश को कार में फूंक कर हत्या को दुर्घटना का रूप देने की नाकाम कोशिश की।

तीनों आरोपी

पत्नी का सोचना गलत नही था। दरअसल नीलेश का गढ़ाकोटा के पास एक गांव में रहने वाली 25 वर्षीय युवती से अवैध संबंध था। यह रिश्ता धीरे-धीरे छिटपुट मुलाकातों से कहीं गंभीर हो गया था। आए दिन नीलेश और उसकी प्रेमिका चोरी छुपे मिलकर वासना का गंदा खेल खेलने लगे थे। इसलिए 22-25 साल की युवा प्रेमिका के प्यार की गरमी के आगे नीलेश को सीमा ठंडी और बासी दिखाई देने लगी थी। इसलिए नीलेश अपनी नई जिंदगी के रास्ते में रुकावट बनी पत्नी से उकताने लगा था। इसके कारण दोनों के बीच झगड़े छोटी-मोटी बहसों से शुरू होकर लगातार बढ़ते चले गए जिसके चलते नीलेश अक्सर अपनी पत्नी से मारपीट करने लगा।

सीमा का मायका पास ही रहली तहसील के जूना गांव में था। पति के अवैध संबंध के कारण अपने साथ होने वाली मारपीट की बात सीमा ने अपने भाई लोकेश को बताई। इस पर भाई ने उसे मायके आकर रहने कहा लेकिन फिर परिवार और बच्चों को ध्यान आते ही उसने यह सोचकर संतोष कर लिया के शायद समय के साथ सब ठीक हो जाएगा। लेकिन उसे नहीं पता था कि उसका पति उसे हमेशा के लिए हटाना चाहता था।

डॉ. नीलेश के मकान में दो किरायेदार रहते थे रामकृष्ण कुर्मी और शिवम कुर्मी। दोनों नीलेश के घर में पैथोलॉजी लैब चलाते थे। वे डॉ. नीलेश के क्लीनिक से सैंपल लेकर जाते थे। नीलेश और उनके बीच एक व्यावसायिक रिश्ता था, जो धीरे-धीरे और घातक होता गया। रामकृष्ण महत्वाकांक्षी था उसने डॉ. नीलेश में सिर्फ एक व्यावसायिक संपर्क नहीं, बल्कि एक अवसर देखा। जब डॉक्टर ने अपनी वैवाहिक समस्याओं की ओर इशारा करना शुरू किया, तो रामकृष्ण ने सिर्फ सहानुभूति से ज्यादा दिलचस्पी दिखाई। शिवम रामकृष्ण के पीछे-पीछे चलता था। इससे धीरे-धीरे वे दोनों डॉ. नीलेश के विश्वासपात्र, उसकी सोच के साथी और सहयोगी बन गए।

यह साजिश एक रात में नहीं बनी। यह टुकड़े-टुकड़े बनी-देर रात की फुसफुसाती बातों में, ऐसे संकेतों में जो धीरे-धीरे स्पष्ट होते गए।

डॉक्टर ने अपनी योजना इस सटीकता से रखी कि सांप भी मर जाए और लाठी भी न टूटे। वह सीमा को घर में मार डालेगा, फिर एक सड़क दुर्घटना का रूप देगा फिर आग सबूतों को मिटा देगी। अपनी मेडिकल पृष्ठभूमि के कारण, वह मौत के कारण के बारे में उठने वाले सवालों को आसानी से टाल सकता था।

लेकिन योजना को सिर्फ दो सहयोगियों से अधिक की जरूरत थी। उसे एक खास परिस्थिति की जरूरत थी, और सबसे बढ़कर, यह सुनिश्चित करना था कि घर में किसी को पता न चले।

पुलिस जांच में बाद में पता चला कि डॉ. नीलेश ने अपने किरायेदारों को काफी बड़ी रकम का लालच दिया था। जांच से जुड़े सूत्रों के अनुसार, डॉक्टर ने अपने साथियों को लगभग 2-2 लाख रुपये देने का वादा किया था। रामकृष्ण और शिवम ने बाद में दावा किया कि उन्हें अंदाजा नहीं था कि योजना कितनी गंभीर है, जब तक कि बहुत देर न हो चुकी थी। लेकिन सबूत कुछ और ही बताते हैं।

20 मार्च एक आम दिन रहा था। क्लीनिक में मरीज आए-गए। सीमा ने घर का काम किया, रात का खाना बनाया, बेटी के होमवर्क में मदद की। जिस किसी ने भी उस दिन उन्हें देखा, उसने नहीं सोचा होगा कि उनकी दुनिया बिखरने वाली है। उस रात डॉ. नीलेश करीब रात 2 बजे घर लौटे। सीमा उनका इंतजार कर रही थी। जो झगड़ा महीनों से बढ़ रहा था, वह रात बेहद विनाशकारी रूप में फूट पड़ा।

एक के बाद एक आरोप लगे। सीमा ने उसके अवैध संबंध, देर रात घर लौटने, उन सब चीजों के बारे में सामने से पूछा जिन्हें वह चुपचाप सह रही थी।

सीमा के इस रूप को देखकर गुस्से में आकर डॉ. नीलेश ने अपनी उंगलियां पत्नी के गले में गड़ा दीं और दबाया। सीमा ने विरोध कियो लेकिन वह उस आदमी के सामने कहां टिकती जिसके ऊपर एक जवान लड़की के प्यार का नशा छाया हुआ था। इसी बीच बेटी की नींद टूट जाने पर नीलेश ने उससे कहा कि तुम्हारी मां की तबीयत खराब है, मैं उन्हें अस्पताल ले जा रहा हूं। तुम सो जाओ। बच्ची, जो अभी इतनी बड़ी नहीं थी कि जो देखा उसे समझ पाती, मान गई।

डॉक्टर ने तुरंत अपनी योजना को अमलीजामा पहनाना शुरू किया। उसने रामकृष्ण और शिवम को फोन करके बताया कि सीमा को हार्ट अटैक आया है। उसके किरायेदार, जिन्हें पहले से ही उनकी भूमिका समझा दी गई थी, कुछ ही मिनटों में आ गए। तीनों ने मिलकर सीमा के बेहोश या शायद पहले ही मृत-शरीर को कार में रखा। उसे पिछली सीट पर लिटाया, नीलेश को उसका सिर गोद में लेकर बैठाया गया, ताकि यह दिखाया जा सके कि उसे इलाज के लिए ले जाया जा रहा है।

जाने से पहले डॉ. नीलेश ने एक और कदम उठाया। उसने घर के सीसीटीवी कैमरे बंद कर दिए और बाहर की लाइटें भी बंद कर दीं। करीब सुबह 3 बजे कार सीमा को लेकर घर से निकली जो अब कभी वापस नहीं लौटने वाली थी।

गढ़ाकोटा से चनाटोरिया टोल प्लाजा तक की दूरी लगभग 50 किलोमीटर है। आम हालात में यह सफर एक घंटे में पूरा हो जाता है। लेकिन उस रात कार में बैठे तीन आदमी कहीं जल्दी में नहीं थे। उनकी कोई मंजिल थी, और वे किसी अस्पताल की ओर नहीं जा रहे थे। यह एक भयानक दृश्य था। तीन आदमी, बड़ी सावधानी से सोची गई हत्या को अंजाम दे रहे थे, और साथ ही नेक बनकर एक मरीज को अस्पताल ले जाने का नाटक कर रहे थे।

गाड़ी करीब सुबह 4 बजे सानौधा थाना क्षेत्र में चनाटोरिया टोल प्लाजा के पास पहुंची। लेकिन टोल बूथ पर रुकने या अस्पताल की ओर मुड़ने के बजाय, डॉ. नीलेश ने गाड़ी को पास की एक सुनसान सड़क पर मोड़ लिया। यह जगह जानबूझकर चुनी गई थी। इतनी दूर कि कोई देख न सके। इतनी अंधेरी कि आग की लपटें तुरंत ध्यान न आकर्षित करें। इतनी सुनसान कि मदद बहुत देर से आए। तीनों आदमी गाड़ी से उतरे। डिक्की में वह प्लास्टिक का कंटेनर था जिसमें पेट्रोल भरा था।

डॉ. नीलेश ने कंटेनर खोला और कार के अंदर पेट्रोल डालना शुरू किया। तरल सीटों पर, डैशबोर्ड पर और सीमा के शरीर पर फैल गया। ईंधन की तीखी रासायनिक गंध रात की हवा में फैल गई। फिर माचिस जलाई जिसने कार को धधकती चिता में बदल दिया। लपटें ऊंची उठीं, आसपास के इलाके पर नाचती परछाइयां डालतीं। गर्मी इतनी तेज थी कि दूर से भी महसूस की जा सकती थी।

लेकिन तीनों आदमी सुरक्षित दूरी पर नहीं हटे। वह करीब खड़े रहे, देखते रहे। पुलिस जांच के अनुसार, वे कार के बाहर खड़े रहे और देखते रहे कि आग अंदर सब कुछ कैसे भस्म कर रही है।

इस बीच डॉ. नीलेश ने अपना फोन निकाला और अपने ससुराल वालों को फोन कर दिया। लोकेश पटेल, सीमा के भाई, ने फोन उठाया और अपने जीजा की आवाज सुनी, शांत, नियंत्रित, कहानी का पहला संस्करण पेश करते हुए। सीमा को हार्ट अटैक आया। गाड़ी में आग लग गई। मुझे बहुत अफसोस है।

जब स्थानीय अधिकारी घटनास्थल पर पहुंचे, तो उन्हें एक दुखद दुर्घटना नजर आई। जली हुई कार। अंदर एक महिला का शरीर। तीन आदमी पास में खड़े, सदमे में लेकिन सुरक्षित। डॉ. नीलेश ने अपनी कहानी पेशेवर ढंग से रखी। सीमा को सीने में दर्द हुआ, वह उसे अस्पताल ले जा रहा था कि कार में कुछ खराबी आ गई। शायद सीएनजी सिलिंडर में ब्लास्ट हुआ। उसे ठीक से पता नहीं। वह सिर्फ इतना जानता था कि उसकी पत्नी मर चुकी थी और वह तबाह है।

लोकेश पटेल को अपनी बहन की मौत की खबर सदमे और गम के साथ मिली। लेकिन शोक में भी उसे कुछ अटपटा लगा। बातें मेल नहीं खा रही थीं। लोकेश को बहन की वैवाहिक समस्याओं के बारे में पता था। सीमा ने उसे झगड़ों, अवैध संबंध के शक, घर के बढ़ते तनाव के बारे में बताया था। और अचानक वह ऐसे हालात में मर गई जिनका कोई तार्किक स्पष्टीकरण नहीं था। वह पुलिस के पास गया और जोर देकर कहा कि उसकी बहन की हत्या हुई है। लोकेश की दृढ़ता, आधिकारिक कहानी को मानने से इनकार, वही था जिसने अंततः सच्चाई को उजागर किया।

अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक लोकेश सिन्हा ने व्यक्तिगत रूप से जांच का नेतृत्व किया। घटनास्थल के उनके शुरुआती आकलन ने पहले ही कई सवाल खड़े कर दिए थे। कार लगभग पूरी तरह जल चुकी थी, फिर भी तीनों आदमी बिना किसी खरोंच के बाहर निकल आए थे। अगर आग अचानक और दुर्घटनावश लगी होती, तो वे इतनी जल्दी कैसे बाहर निकल गए? और वे सीमा को बचा क्यों नहीं पाए?

शव की स्थिति ने भी बातें बयान कीं। सीमा पिछली सीट पर, ड्राइवर साइड पर मिली थी, और दरवाजा अंदर से बंद था। अगर आग लगते वक्त वह होश में होती, तो वह जरूर बाहर निकलने की कोशिश करती। सड़क पर टायर के घिसटने के निशान या कार में टक्कर के निशान न होने से दुर्घटना वाली थ्योरी कमजोर हो गई। सीएनजी सिलिंडर सुरक्षित था, जिससे ब्लास्ट की आशंका खत्म हो गई। और फिर वह पेट्रोल का कंटेनर था जो घटनास्थल के पास झाड़ियों में छिपा मिला था।

पुलिस टीम ने घटनास्थल के आसपास बहुत बारीकी से तलाशी ली। जली हुई कार से लगभग पचास मीटर दूर, झाड़ियों के पीछे, उन्हें एक प्लास्टिक का कंटेनर मिला जिसमें पेट्रोल के निशान थे। पास में माचिस की डिब्बी। फोरेंसिक जांच ने बाद में पुष्टि की कि जानबूझकर घटनास्थल पर ईंधन लाकर जानबूझकर आग लगाई गई है।

जांच करती पुलिस तथा जली हुई कार

उसे अटैक आया था

आरोपी डॉक्टर नीलेश का कहना है कि मेरी पत्नी की मौत हार्ट अटैक से हुई। उस रात उसे उसे अचानक पसीना आया और उसकी पल्स रेट गिर गई। हम उसे अस्पताल ले जा रहे थे कि गाड़ी में खराबी आ गई। मुझ पर और मेरे किरायेदारों पर लगाए गए आरोप झूठे हैं। अपितु पेट्रोल की बॉटल, माचिस, बंद सीसीटीवी कैमरों के बारे में उसने सवालों को टाल दिया।

कई सवाल बाकी है

पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट ही यह तय करेगी कि आग लगते वक्त सीमा जीवित थी या पहले ही गला घोंटने से मौत हो चुकी थी। अगर वह आग लगते वक्त जीवित थी, तो अपराध जिंदा जलाने का है। अंतिम रिपोर्ट तक कई सवाल अनुत्तरित थे। पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट अभी नहीं आई थी, जिससे यह स्पष्ट नहीं था कि आग लगते समय सीमा जीवित थी या नहीं। डॉ. नीलेश के अपने सहयोगियों के साथ वित्तीय लेन-देन की पूरी हद स्थापित नहीं हो पाई थी। और डॉ. नीलेश जिस युवती के साथ संबंध रखता था, उसकी भूमिका अस्पष्ट थी।

जली कार से निकला सीमा का कंकाल

गांव में थी अच्छी छवि

मृतका का भाई

मृतका का पिता

एडीशनल एसपी सागर

मोबाइल फोन डेटा ने पहेली का एक और टुकड़ा दिया। कॉल डिटेल से पता चला कि डॉ. नीलेश आग लगने से पहले के घंटों में अपने किरायेदारों के संपर्क में था, और उसकी हरकतें उस हार्ट अटैक वाली कहानी से मेल नहीं खाती थीं। टोल प्लाजा के सीसीटीवी कैमरों ने, हालांकि सीमित फुटेज था, डॉ. नीलेश की गाड़ी से मिलती-जुलती एक कार दिखाई, जो बिना रुके टोल से गुजर गई उस जगह से आगे निकल गई, जहां से कोई इमरजेंसी वाहन अस्पताल की ओर मुड़ जाता।

पुलिस ने डॉ. नीलेश, रामकृष्ण और शिवम को पूछताछ के लिए बुलाया। शुरू में तीनों हार्ट अटैक और दुर्घटना वाली कहानी पर अड़े रहे। लेकिन जैसे-जैसे तकनीकी सबूत पेश किए गए, जैसे-जैसे उनके बयानों में विरोधाभास स्पष्ट हुए, कहानी टूटने लगी। रामकृष्ण पहले टूटा। पेट्रोल कंटेनर, फोन डिटेल और किसी वास्तविक मेडिकल इमरजेंसी के न होने के सबूतों के सामने उसकी स्थिरता टूट गई।

उसने कहा, हम तो बस उसकी मदद कर रहे थे, उसने जोर देकर कहा नीलेश ने हमे बताया था कि वह बीमार है। हम नहीं जानते थे कि वह क्या करने वाला है।

लेकिन पुलिस ने और दबाव डाला। वह कैसे नहीं जान सकता था, जब उसने पेट्रोल डालते देखा था? वह कैसे नहीं जान सकता था, जब वह कार के बाहर खड़ा एक महिला को जलते देखता रहा था? दूसरी तरफ शिवम ने जल्द ही सब कुछ बता दिया। उसने उस रात के घटनाक्रम का विस्तार से वर्णन किया-झगड़ा, गला घोंटना, बेटी का जागना, सुनसान जगह तक की ड्राइव।

डॉक्टर ने पूरे समय अपनी स्थिरता बनाए रखी, बेगुनाही का मुखौटा पहने रखा। लेकिन जब फोरेंसिक सबूतों-पेट्रोल, माचिस, फोन डिटेल, बंद किए गए सीसीटीवी कैमरे, बंद लाइटों-का सामना हुआ, तो उसकी कहानी में दरारें दिखने लगीं।

पुलिस समझ गई कि यह कोई आवेग में की गई हिंसा नहीं थी। बल्कि सोच समझकर की गई हत्या है। एकत्र सबूतों के आधार पर पुलिस ने डॉ. नीलेश कुर्मी, रामकृष्ण कुर्मी और शिवम कुर्मी को औपचारिक रूप से गिरफ्तार कर लिया। उन पर हत्या, आपराधिक साजिश और सबूत मिटाने के आरोप लगाए गए-ऐसे आरोपों का संयोजन जिसमें उम्रकैद या, चरम मामलों में, फांसी की सजा हो सकती है। तीनों को अदालत में पेश किया गया, जहां अदालत ने तीनों को न्यायिक हिरासत में भेज दिया।

कहानी पुलिस सूत्रों पर आधारित सभी नाम बदले हुए हैं।

कौन है आरोपी डॉक्टर की प्रेमिका : इस पूरे मामले में गढ़ाकोटा में यह चर्चा आम रही कि आखिर डॉक्टर नीलेश की प्रेमिका कौन है जिसके लिए उसने अपनी पत्नी तक की हत्या कर दी। अपितु इस बारे में दावे के साथ तो कोई कुछ नहीं कह सकता लेकिन जो चर्चा है उसके अनुसार गढ़ाकोटा से लगभग 5-7 किलोमीटर दूर एक गांव में रहने वाली लड़की के साथ डॉक्टर का काफी मिलना जुलना था। डॉक्टर नीलेश गांव-गांव जाकर इलाज भी करता था। इसलिए कहा जा रहा है कि नीलेश और उसकी प्रेमिका को पहला परिचय मरीज और डॉक्टर के तौर पर हुआ था। बाद में नीलेश अपनी इस युवा मरीज का दीवाना हो गया जिससे दोनों के बीच अवैध संबंध बन गए थे। इसके बाद डॉक्टर नीलेश ने प्रेमिका के संग शादी करने की अपनी मंशा पूरी करने के लिए पत्नी की हत्या कर दी।